अध्याय–14

शुद्धीकरण (शब्द एवं वाक्य)

शब्द शुद्धि

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और शब्द भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। भाषा के माध्यम से ही मानव मौखिक एवं लिखित रूपों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग आवश्यक है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगती। कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के कई कारण हो सकते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. मात्रा प्रयोग–

हिन्दी के कई शब्द ऐसे हैं जिनको लिखते समय मात्रा के प्रयोग विषयक संशय उत्पन्न हो जाता है। ऐसे शब्दों का ठीक से उच्चारण करने पर उचित मात्रा प्रयोग किया जाना संभव होता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अतिथी	अतिथि	आहुती	आहूति
इंदोर	इंदौर	ईकाई	इकाई
उर्जा	ऊर्जा	उहापोह	ऊहापोह
ऊषा	उषा	एरावत	ऐरावत
करूणा	करुणा	केकयी	कैकेयी
क्योंकी	क्योंकि	क्षिती	क्षिति
गितांजली	गीतांजलि	गोतम	गौतम
गोरव	गौरव	तिथी	तिथि
तियालीस	तैंतालीस	तिलांजली	तिलांजलि
त्रिपुरारी	त्रिपुरारि	त्यौंहार	त्योहार
दवाईयाँ	दवाइयाँ	दिवारात्रि	दिवारात्र
दीयासलाइ	दियासलाई	निरव	नीरव
निरिक्षण	निरीक्षण	नीती	नीति
नुपुर	नूपुर	प्रतिनीधी	प्रतिनिधि
प्रतीलीपि	प्रतिलिपि	पत्नि	पत्नी

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पड़ौसी	पड़ोसी	परिक्षा	परीक्षा
परिक्षित	परीक्षित	पितांबर	पीतांबर
पुज्य	पूज्य	पूज्यनीय	पूजनीय
पुरूस्कार	पुरस्कार	बधाईयाँ	बधाइयाँ
बिमार	बीमार	मारूति	मारुति
मिट्टि	मिट्टी	मिलित	मीलित
मुल्य	मूल्य	मूर्ती	मूर्ति
मूमर्ष	मुमूर्ष	मेथलीशरण	मैथिलीशरण
युयूत्सा	युयुत्सा	रचियता	रचयिता
रुप	रूप	रात्री	रात्रि
रूपया	रुपया	शारिरिक	शारीरिक
श्रीमति	श्रीमती	हरितिमा	हरीतिमा

2. आगम–

शब्दों के प्रयोग में अज्ञानवश या भूलवश जब अनावश्यक वर्णों का प्रयोग किया जाए तो उसे आगम कहते हैं। आगम स्वर व व्यंजन दोनों का हो सकता है। अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त इन वर्णों को हटाकर शब्दों का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है।

स्वर का आगम–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	अहिल्या	अहल्या
अहोरात्रि	अहोरात्र	आधीन	अधीन
पहिला	पहला	तदानुकूल	तदनुकूल
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	वापिस	वापस

व्यंजन का आगम–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंतर्ध्यान	अंतर्धान	कृत्यकृत्य	कृतकृत्य
चिक्कीर्षा	चिकीर्षा		
मानवीयकरण	मानवीकरण	षष्ठम्	षष्ठ
सदृश्य	सदृश	समुन्द्र	समुद्र
सौजन्यता	सौजन्य		

3. लोप–

शब्दों के प्रयोग में जब किसी आवश्यक वर्ण (स्वर या व्यंजन) का प्रयोग होने से रह जाए तो वह लोप कहलाता है। इस आधार पर भी शब्दों के सही प्रयोग करने हेतु आवश्यक स्वर या व्यंजन जोड़कर त्रुटि रहित प्रयोग किया जा सकता है। जैसे–

स्वर का लोप–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	आजीवका	आजीविका
उज्यनी	उज्जयिनी	कालंदि	कालिंदी
जमाता	जामाता	द्वारिका	द्वारका
मोक्षदायनी	मोक्षदायिनी	वयाकरण	वैयाकरण
स्वस्थ्य	स्वास्थ्य		

व्यंजन का लोप–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुछेद	अनुच्छेद	उपलक्ष	उपलक्ष्य
गणमान्य	गण्यमान्य	छत्रछाया	छत्रच्छाया
जोत्सना	ज्योत्सना	धातव्य	ध्यातव्य
प्रतिछाया	प्रतिच्छाया	प्रतिद्वंद	प्रतिद्वंद्व
मत्सेंद्र	मत्स्येंद्र	महात्म	माहात्म्य
मिष्टान	मिष्टान्न	याज्ञवल्क	याज्ञवल्क्य
व्यंग	व्यंग्य	सामर्थ	सामर्थ्य
स्वालंबन	स्वावलंबन		

4. वर्ण व्यतिक्रम (क्रम भंग)–

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को उनके क्रम से प्रयुक्त न कर शब्द में उसके नियत स्थान की अपेक्षा किसी अन्य क्रम पर प्रयुक्त करना वर्ण व्यतिक्रम कहलाता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अथिति	अतिथि	अपरान्ह	अपराह्न
आवाहन	आह्वान	आल्हाद	आह्लाद
चिन्ह	चिह्न	जिव्हा	जिह्वा
पूर्वान्ह	पूर्वाह्न	प्रल्हाद	प्रह्लाद
ब्रम्हा	ब्रह्मा	मध्यान्ह	मध्याह्न
विव्हल	विह्वल		

5. वर्ण परिवर्तन–

कई बार वर्ण प्रयुक्त करते समय असावधानीवश किसी वर्ण विशेष के स्थान पर किसी दूसरे वर्ण का प्रयोग हो जाता है। यह प्रयोग वर्तनी की अशुद्धि को दर्शाता है। अत: इस प्रकार के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अधिशाषी	अधिशासी	आंसिक	आंशिक
कनिष्ट	कनिष्ठ	खंबा	खंभा

छीद्रान्वेशी	छिद्रान्वेषी	जुखाम	जुकाम
निशंग	निषंग (तरकश)	नृसंश	नृशंस
पुरुस्कार	पुरस्कार	प्रसासन	प्रशासन
यथेष्ठ	यथेष्ट	रामायन	रामायण
वरिष्ट	वरिष्ठ	विंधाचल	विंध्याचल
श्राप	शाप	सीधा-साधा	सीधा-सादा
संगटन	संगठन	संघठन	संघटन
संतुष्ठ	संतुष्ट	सुस्रुषा	सुश्रुषा

6. संयुक्ताक्षरों व व्यंजन द्वित्व का अशुद्ध प्रयोग–

दो व्यंजनों के बीच स्वर का अभाव संयुक्ताक्षर बनाता है वहीं दो समान व्यंजनों में से कोई एक जब स्वर रहित हो व तुरंत एक-दूसरे के बाद आए तो ऐसा प्रयोग द्वित्व कहलाता है। शुद्ध लेखन के लिए इन संयुक्त एवं द्वित्व वर्णों के प्रयोग में भी सावधानी रखनी चाहिए। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अद्वितिय	अद्वितीय	उतम	उत्तम
उतीर्ण	उत्तीर्ण	उलंघन	उल्लंघन
उल्लेखित	उल्लिखित	निमित	निमित्त
न्यौछावर	न्योछावर	प्रज्जवलित	प्रज्वलित
बुद्धवार	बुधवार	योधा	योद्धा
रक्खा	रखा	विध्यालय	विद्यालय
वृद्वि	वृद्धि	शुद्धिकरण	शुद्धीकरण
संक्षिप्तिकरण	संक्षिप्तीकरण		

7. पंचम वर्ण/अनुस्वार/अनुनासिकता (चंद्र बिंदु) का प्रयोग–

कई बार शब्दों में अनुस्वार या अनुनासिक चिह्न के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

इनमें से अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक या अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग त्रुटिपूर्ण होता है। अत: इनके प्रयोग में विशेष सावधानी की जरूरत होती है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अँकुर	अंकुर	अँधा	अंधा
आंसू	आँसू	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	कुआ	कुआँ
गान्धी	गाँधी	चन्चल	चंचल
चांद	चाँद	जगंनाथ	जगन्नाथ
झांसी	झाँसी	झूँठ	झूठ
थूंक	थूक	दांत	दाँत

दिंगनाग	दिङ्नाग	पाचवां	पाँचवाँ
वांगमय	वाङ्मय	षणमास	षण्मास
षन्मुख	षण्मुख	सन्लग्न	संलग्न
सन्लाप	संलाप	सन्शय	संशय
सम्हार	संहार	हन्स	हंस
हंसना	हँसना	हंसमुख	हँसमुख
हंसिया	हँसिया		

8. 'रेफ' व 'र' के अशुद्ध प्रयोग–

'र ' तथा रेफ के असावधानीपूर्वक प्रयोग से कई बार शब्दों में वर्तनी दोष आ जाता है। अत: शुद्ध वर्तनी प्रयोग का ध्यान रखते हुए इनके प्रयोग में सावधानी रखकर हम त्रुटिपूर्ण प्रयोग से बच सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अथार्त	अर्थात्	अहरनिस	अहर्निश
अनुगृह	अनुग्रह	अनुग्रहित	अनुगृहीत
आर्शिवाद	आशीर्वाद	क्रशांगी	कृशांगी
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष	तीर्थंर्कर	तीर्थंकर
दुगर्ति	दुर्गति	दशर्न	दर्शन
सर्मथ	समर्थ	नमर्दा	नर्मदा
पुर्नजन्म	पुनर्जन्म	प्रत्र्यपण	प्रत्यर्पण
ब्रहस्पति	बृहस्पति	मरयादा	मर्यादा
मूद्धर्न्य	मूर्द्धन्य	मुर्हुत	मुहूर्त
विगृह	विग्रह	व्रद्धीकरण	वृद्धीकरण
श्रृंगार	शृंगार	संग्रहित	संगृहीत
सृष्टा	स्रष्टा	स्त्रोत्र	स्तोत्र
स्त्रोत	स्रोत	स्रष्टि	सृष्टि

9. संधि–

संधि के नियमों की जानकारी के अभाव में भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अत: वे शब्द जो संधि शब्द बन रहे हों उनके प्रयोग में संधि के नियमों के सावधानीपूर्वक प्रयोग से हम शब्दों का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	अभ्यारण्य	अभयारण्य
अंताक्षरी	अंत्याक्षरी	अन्विती	अन्विति
अभ्यांतर	अभ्यंतर	उपरोक्त	उपर्युक्त
कविंद्र	कवींद्र	उचछवास	उच्छवास

उज्वल	उज्ज्वल	गत्यावरोध	गत्यवरोध
पुनरावलोकन	पुनरवलोकन	पुनरोक्ति	पुनरुक्ति
पुनरोत्थान	पुनरुत्थान	दुरावस्था	दुरवस्था
तत्त्वाधान	तत्त्वावधान	भगवतगीता	भगवदगीता
भाष्कर	भास्कर	मेघाछन्न	मेघाच्छन्न
रविंद्र	रवींद्र	लघुत्तर	लघूत्तर
षट्यंत्र	षड्यंत्र	संसदसदस्य	संसत्सदस्य
सम्यकज्ञान	सम्यग्ज्ञान	सरवर	सरोवर

10. समास–

शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु समास के नियमों का भी ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा व्यवहार में आने वाले सामासिक पदों के प्रयोग में समास के नियमों का ध्यान रख कर हम त्रुटियों से बच सकते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अष्टवक्र	अष्टावक्र	अहोरात्रि	अहोरात्र
एकलोता	इकलौता	दिवारात्रि	दिवारात्र
निरपराधी	निरपराध	सकुशलतापूर्वक	सकुशल/कुशलतापूर्वक
सशंकित	सशंक	योगीवर	योगिवर
यौवनावस्था	युवावस्था		

11. उपसर्ग–

उपसर्ग के प्रयोग से बने शब्दों में उचित उपसर्ग की पहचान कर लेखन या वाचन करने से शब्दों का शुद्ध प्रयोग संभव हो सकता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनधिकार	तदोपरांत	तदुपरांत
निरावलंब	निरवलंब	निशुल्क	निश्शुल्क/निःशुल्क
निराभिमान	निरभिमान	निरालंकृत	निरलंकृत
निसंकोच	निस्संकोच	बेफिज़ूल	फिजूल/फ़ज़ूल
बईमान	बेईमान	सदृश्य	सादृश्य/सदृश
सशंकित	सशंक/शंकित	सानंदपूर्वक	सानंद/आनंदपूर्वक

12. प्रत्यय–

प्रत्यय के नियमों की जानकारी के अभाव के कारण भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः प्रत्यय के सही व सावधानीपूर्वक प्रयोग से लेखन में होने वाली अशुद्धि से बच सकते हैं। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुपातिक	आनुपातिक	उद्योगीकरण	औद्योगिकीकरण
उपनिवेशिक	औपनिवेशिक	एतिहासीक	ऐतिहासिक
ऐशवर्य	ऐश्वर्य	ओद्योगिक	औद्योगिक

ओदार्य	औदार्य	औदार्यता	उदारता
कार्पण्यता	कृपणता	कोंतेय	कौंतेय
क्रोधित	क्रुद्ध	गोरवता	गुरुता
ग्रसित	ग्रस्त	चातुर्यता	चातुर्य/चतुरता
तत्कालिक	तात्कालिक	दारिद्रयता	दरिद्रता/दारिद्रय
दैन्यता	दैन्य	धैर्यता	धीरता/धैर्य
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	प्रमाणिक	प्रामाणिक
प्रामाणिकरण	प्रमाणीकरण	प्रागेतिहासीक	प्रागैतिहासिक
प्रोद्योगिकी	प्रौद्योगिकी	भाग्यमान	भाग्यवान
वाल्मिकी	वाल्मीकि	व्यवहारीक	व्यावहारिक

13. लिंग–

हिन्दी में स्त्री लिंग व पुल्लिंग शब्दों के प्रयोग के विशिष्ट नियम हैं जो हम लिंग वाले अध्याय में विस्तृत रूप से पढ़ चुके हैं। लिंग परिवर्तन व पहचान के नियमों का सही प्रयोग हम अशुद्धियों से बच सकते है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाथिनी	अनाथ	कवित्री	कवयित्री
गुणवानी	गुणवती	चमारी	चमारिन
चूही	चुहिया	जेठी	जेठानी
ठाकुरनी	ठकुराइन	दाती	दात्री
दुल्हा	दुल्हिन	नेती	नेत्री
पिशाचिनी	पिशाची	भुजंगी	भुजंगिनी
विद्वानी	विदुषी	श्रीमति	श्रीमती
सुनारी	सुनारिन		

14. वचन–

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं-एकवचन और बहुवचन। इनके प्रयोग व पहचान की विस्तृत चर्चा वचन वाले अध्याय में हो चुकी है। इनका ठीक तरीके से पालन हमें शुद्ध लेखन में मदद करता है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनेकों	अनेक	आसुएं	आँसू
इकाईयाँ	इकाइयाँ	गोवें	गौएँ
हिन्दुवों	हिन्दुओं	दवाईयाँ	दवाइयाँ
विद्यार्थीगण	विद्यार्थिगण		

वाक्य शुद्धि

जिस प्रकार हम शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु सावधानी रखते हैं ठीक उसी प्रकार वाक्य प्रयोग के समय भी उतना ही सावधान रहना जरूरी होता है। वाक्य प्रयोग में कई बार असावधानी या अज्ञानतावश कुछ त्रुटियाँ हो जाती हैं। ये त्रुटियाँ विशेष रूप से शब्दों के अनावश्यक या अनुपयुक्त प्रयोग, लिंग, वचन, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के अनुपयुक्त प्रयोग आदि के कारण होती हैं। अतः वाक्य रचना में इन त्रुटियों से बचना चाहिए। वाक्य में त्रुटि होने के कई कारण हो सकते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. अनावश्यक शब्द प्रयोग–

कई बार वाक्य रचना करते समय हम अनावश्यक शब्द का प्रयोग कर लेते हैं। यहाँ एक ही अर्थ को दर्शाने वाले शब्दों का दोहराव विशेष रूप से दिखाई पड़ता है। अतः वाक्य रचना में हमें इस प्रकार के अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण वाक्य

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसे लगभग शत प्रतिशत अंक मिले।	उसे शत प्रतिशत अंक मिले।
2.	मैं सायंकाल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं सायंकाल घूमने जाता हूँ।
3.	सारी दुनिया भर में यह बात फैल गई।	दुनिया भर में यह बात फैल गई।
4.	वह विलाप करके रोने लगी।	वह विलाप करने लगी।
5.	विंध्याचल पर्वत बहुत प्राचीन है।	विंध्याचल बहुत प्राचीन है।
6.	किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	किसी और परामर्श लीजिए।
7.	वह बहुत सज्जन पुरुष है।	वह बहुत सज्जन है।
8.	वह सबसे सुन्दरतम कमीज है।	वह सबसे सुन्दर कमीज है।
9.	शायद वह जरूर जाएगा।	वह जरूर जाएगा।
10.	देश की वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नहीं है।	देश की वर्तमान हालत ठीक नहीं है।
11.	सप्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए।	सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।
12.	ठंडा बर्फ लाओ	बर्फ लाओ।
13.	दासता युक्त गुलामी का का जीवन ठीक नहीं	दासता युक्त जीवन ठीक नहीं।
14.	कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।	कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
15.	तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।	नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।
16.	वह पानी से पौधों को सींचता है।	वह पौधों को सींचता है।

2. अनुपयुक्त शब्द प्रयोग–

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयोग भी अशुद्धि ला देता है। अतः हम किस प्रसंग में क्या लिख रहे हैं यह ध्यान में रखते हुए शब्द चयन करना चाहिए। जैसे–

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसने हाथी पर काठी बाँध दी।	उसने हाथी पर हौदा रख दिया।
2.	सेना ने विख्यात आतंकवादी मार गिराया।	सेना ने कुख्यात आतंकवादी मार गिराया।
3.	इस सौभाग्यवती कन्या को आशीर्वाद दें।	इस सौभाग्याकांक्षिणी कन्या को आशीर्वाद दें।
4.	गोलियों की बाढ़ के समक्ष कोई टिक न सका	गोलियों की बौछार के समक्ष कोई टिक न सका।
5.	तुलसी ने मानस की रचना लिखी है।	तुलसी ने मानस की रचना की है।
6.	वह कड़ाही–बुनाई जानती है।	वह कढ़ाई–बुनाई जानती है।
7.	शास्त्रीजी की मृत्यु से हमें बड़ा खेद हुआ।	शास्त्री जी के निधन से हमें बड़ा दु:ख हुआ।
8.	हमें चरखा कातना चाहिए।	हमें चरखा चलाना चाहिए।
9.	आगामी घटनाओं को कौन जान सकता है।	भावी घटनाओं को कौन जान सकता है।
10.	तलवार एक उपयोगी अस्त्र है।	तलवार एक उपयोगी शस्त्र है।
11.	बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की नोक पर चलने के समान कष्टदायी है।	बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की धार पर चलने के समान कष्टदायी है।
12.	अपराधी को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई।	अपराधी को मृत्युदंड दिया गया।
13.	अंधेरी रात में कुत्ते जोर से चिल्ला रहे थे।	अंधेरी रात में कुत्ते जोर से भोंक रहे थे।
14.	कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।	कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
15.	देश भर में दीपावली का उत्सव मनाया गया।	देश भर में दीपावली का त्योहार मनाया गया।
16.	कालचक्र के पहिए से बचना संभव नहीं है।	कालचक्र से बचना संभव नहीं है।
17.	लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करके रोने लगे।	लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करने लगे।

सर्वनाम संबंधी–

सर्वनाम शब्दों के अशुद्ध प्रयोग से भी वाक्य में अशुद्धि हो जाती है। जैसे–

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मैंने कल जयपुर जाना है।	मुझे कल जयपुर जाना है।
2.	कोई डॉक्टर को बुला दो।	किसी डॉक्टर को बुला दो।
3.	दूध में कौन गिर गया।	दूध में क्या गिर गया।
4.	दरवाजे पर क्या खड़ा है?	दरवाजे पर कौन खड़ा है?
5.	जो भी हो, लौट आए।	जो भी गया हो, लौट आए।
6.	मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था, और तुम आ गए।	मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। और आप आ गए।
7.	हमको सबको फिल्म देखने जाना है।	हम सबको फिल्म देखने जाना है।
8.	तेरा उत्तर मुझसे अच्छा है।	आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
9.	मेरे को एक पेंसिल चाहिए।	मुझे एक पैंसिल चाहिए।
10.	वह रेडियो पर बोल रहे थे।	वे रेड़ियो पर बोल रहे थे।
11.	उसने काम पूरा कर चुका है।	वह काम पूरा कर चुका है।
12.	मैं रमेश को नहीं मारा हूँ।	मैंने रमेश को नहीं मारा है।
13.	सीता और सीता का पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।	सीता और उसका पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।
14.	मैं तेरे को कुछ कहना चाहता हूँ।	मैं तुझे कुछ कहना चाहता हूँ।
15.	उसने समय पर पहुँचना है।	उसे समय पर पहुँचाना है।
16.	वह जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।	वे जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।
17.	मैं और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।	मुझे और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।
18.	मजदूरों में रोष था इसलिए उसने घेराव किया।	मजदूरों में रोष था इसलिए उन्होंने घेराव किया।
19.	यह ईमानदार इंसान हैं।	ये ईमानदार इंसान हैं।
20.	माताजी ने मुझको बुलाया।	माताजी ने मुझे बुलाया।

विशेषण सम्बन्धी–

विशेषण शब्दों का अनुपयुक्त या अपूर्ण प्रयोग भी वाक्य में अशुद्धि ला देता है अत: वाक्य रचना में विशेषण शब्द प्रयुक्त करते समय भी विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	यह सबसे सुन्दरतम कमीज है।	यह सुन्दरतम कमीज है।
2.	वे एक अच्छे डॉक्टर हैं।	वे अच्छे डॉक्टर हैं।

3.	धोबी ने अच्छे कपड़े धोए।	धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।
4.	भक्तिकालीन समय स्वर्ण युग कहलाता है।	भक्तिकाल स्वर्ण युग कहलाता है।
5.	यह तो विचित्र अद्‌भुत विषय है।	यह तो विचित्र विषय है।
6.	यहाँ पठित लोग रहते हैं।	यहाँ शिक्षित लोग रहते हैं।
7.	किसी और दूसरे व्यक्ति से मिलिए।	किसी और से मिलिए।
8.	आपको सेवानिवृत्ति के बाद के भावी जीवन के लिए शुभकामनाएँ।	आपको सेवानिवृत्ति के बाद शेष जीवन के लिए शुभकामनाएँ।
9.	समस्त मानव मात्र का हित सोचिए।	समस्त मानव जाति का हित सोचिए।
10.	सभी शिक्षकों में मोहन बहुत श्रेष्ठ है।	सभी शिक्षकों में मोहन श्रेष्ठ है।

क्रिया संबंधी–

क्रिया के सही रूप का वाक्य में प्रयोग न होने पर भी वाक्य रचना में दोष आ जाता है। अतः वाक्य रचना के समय इनके चयन में भी विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	अब हम भोजन खायेंगे।	अब हम भोजन करेंगे।
2.	घोड़ा चलते-चलते डट गया।	घोड़ा चलते-चलते अड़ गया।
3.	अब और स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।	अब और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।
4.	अब वह वापस लौट चुका होगा।	अब वह लौट चुका होगा।
5.	उसकी आँख से आँसू बह रहा था।	उसकी आँख से आँसू बह रहे थे।
6.	इस कक्ष के भीतर प्रवेश करना निषेध है।	इस कक्ष में प्रवेश निषेध है।
7.	राम ने संकल्प लिया।	राम ने संकल्प किया।
8.	बच्चा खाना और दूध पीकर सो गया।	बच्चा खाना खाकर और दूध पीकर सो गया।
9.	उसने मुझे दस हजार रुपया दिया।	उसने मुझे दस हजार रुपये दिए।
10.	आगामी रविवार को वह जयपुर गया था।	आगामी रविवार को वह जयपुर जाएगा।

लिंग सम्बन्धी–

वाक्य में प्रयुक्त शब्दानुरूप लिंग का प्रयोग करने पर ही वाक्य रचना शुद्ध हो पाती है। अतः लिंग सूचक शब्दों का प्रयोग वाक्य में आए संज्ञा-सर्वनाम आदि के अनुरूप करना चाहिए। ऐसा करके हम त्रुटि से बच सकते हैं।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मीरा भक्त कवि थी।	मीरा भक्त कवयित्री थी।

2.	शहद बहुत मीठी है।	शहद बहुत मीठा है।
4.	उस हतभागिनी का पति मर गया।	उस हत्भाग्या का पति मर गया।
5.	रमा मेरी पड़ोसी है।	रमा मेरी पड़ोसिन है।
6.	महादेवी विद्वान कवयित्री थीं।	महादेवी विदुषी कवयित्री थीं।
7.	सलोनी एक बुद्धिमान बालिका है।	सलोनी एक बुद्धिमती बालिका है।
8.	ब्रह्मपुत्र भारत में बहता है।	ब्रह्मपुत्र भारत में बहती है।
9.	रनों की औसत अच्छी है।	रनों का औसत अच्छा है।
10.	हवामहल की सौन्दर्य अनुपम है।	हवामहल का सौन्दर्य अनुपम है।

वचन संबंधी–

वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता एवं कर्म के वचन के अनुरूप होता है, ऐसा न होने पर वाक्य में अशुद्धि आ जाती है। अतः वाक्य रचना में वचन का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना जरूरी होता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसने दो कचौड़ी खाई	उसने दो कचौड़ियाँ खाईं।
2.	वहाँ सभी वर्ग के लोग उपस्थित थे।	वहाँ सभी वर्गों के लोग उपस्थित थे।
3.	उसके प्रण पखेरु उड़ गया।	उसके प्राण पखेरू उड़ गए।
4.	आँसू से मेरे कपड़े भीग गए।	आँसुओं से मेरे कपड़े भीग गए।
5.	नवरस में शृंगार रसराज कहलाता है।	नवरसों में शृंगार रसराज कहलाता है।
6.	पेड़ों पर कौआ बोल रहा है।	पेड़ों पर कौए बोल रहे हैं।
7.	आपका दर्शन करके मैं धन्य हुआ।	आपके दर्शन करके मैं धन्य हुआ।
8.	अभी तीन बजा है।	अभी तीन बजे हैं।
9.	सभी लड़कों का नाम बताओ।	सभी लड़कों के नाम बताओ।
10.	चार आदमी के बैठने की व्यवस्था करो।	चार आदमियों के बैठने की व्यवस्था करो।

कारक संबंधी–

कारक और उसके चिह्न (परसर्ग) भी वाक्य की शुद्धता हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनका अनुचित प्रयोग भी वाक्य को दोषपूर्ण बना देता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मैंने आज खाना नहीं खाऊँगा।	मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।
2.	उसने ठेलावाले से फल खरीदे।	उसने ठेले वाले से फल खरीदे।
3.	सैनिकों को कई कष्टों को सहना पड़ता है।	सैनिकों को कई कष्ट सहने पड़ते हैं।
4.	वह आम को खा रहा है।	वह आम खा रहा है।
5.	हमने गाजर घास को समूल से नष्ट	हमने गाजर घास को समूल नष्ट कर दिया।

	कर दिया।	
6.	मोहन आज ऑफिस से अनुपस्थित है।	मोहन आज ऑफिस में अनुपस्थित है।
7.	ध्वनि घर नहीं है।	ध्वनि घर पर नहीं है।
8.	आज विधानसभा में महँगाई के ऊपर बहस होगी।	आज विधानसभा में महँगाई पर बहस होगी।
9.	दादू वाणी की हस्त से लिखित प्रति उपलब्ध है।	दादू वाणी की हस्तलिखित प्रति उपलब्ध है।
10.	वह शहर का सामान लाकर बेचता है।	वह शहर से सामान लाकर बेचता है।

क्रमभंग संबंधी–

वाक्य रचना में शब्दों का एक निश्चित क्रम होता है। उस क्रम से ही उन्हें वाक्य में स्थान देना होता है। ऐसा न करने पर वाक्य में अशुद्धि आ जाती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	बच्चे को प्लेट में रखकर फल खिलाओ।	बच्चे को फल प्लेट में रखकर खिलाओ।
2.	मुझे एक देशभक्ति गीतों की पुस्तक चाहिए।	मुझे देशभक्ति गीतों की एक पुस्तक चाहिए।
3.	बीमार के लिए शुद्ध गाय का दूध लाभदायक होता है।	बीमार के लिए गाय का शुद्ध दूध लाभदायक होता है।
4.	कलम रमा को रमेश ने दी।	रमा ने रमेश को कलम दी।
5.	यहाँ पर शुद्ध भैंस का दूध मिलता है।	यहाँ पर भैंस का शुद्ध दूध मिलता है।
6.	बंदर को काटकर गाजर खिलाओ।	बंदर को गाजर काटकर खिलाओ।
7.	कई रेल्वे के कर्मचारी आज हड़ताल पर थे।	रेल्वे के कई कर्मचारी आज हड़ताल पर थे।
8.	सविता ने आज एक सोने का हार खरीदा।	सविता ने आज सोने का एक हार खरीदा।
9.	सुदामा पक्के कृष्ण के मित्र थे।	सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।
10.	अनेक भारत में जातियों और संप्रदायों के लोग रहते हैं।	भारत में अनेक जातियों व संप्रदायों के लोग रहते हैं।

मुहावरे संबंधी–

मुहावरे का वाक्य में उसी रूप में प्रयोग होना चाहिए। उनमें किसी प्रकार का बदलाव वाक्य में अशुद्धि ला देता है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	वह आजकल अपने मुँह मिया तोता बनने लगा है।	वह आजकल अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने लगा है।
2.	देशद्रोही लोग अंग्रेजों को ऊंगली पर	देशद्रोही लोग अंग्रेजों की ऊँगली पर

	नचाते थे।	नाचते थे।
3.	वह बचपन से ही दूसरों के कान पकड़ने में माहिर है।	वह बचपन से ही दूसरों के कान कतरने में माहिर है।
4.	वह तो कोल्हू की गाय है।	वह तो कोल्हू का बैल है।
5.	हमारे सैनिक जान मुट्ठी में रखकर कर्य करते हैं।	हमारे सैनिक जान हथेली पर रखकर कार्य करते हैं।
6.	ठेकेदारी के काम में तो उसका सोना हो गया है।	ठेकेदारी के काम में तो उसकी चाँदी हो गई है।
7.	शिवाजी ने शत्रु-सेना को दाँतों चने चबवाए।	शिवाजी ने शत्रु-सेना को नाकों चने चबवाये।
8.	उसके सामने अब की किसी दाल नहीं पकती।	उसके सामने अब किसी की दाल नहीं गलती।
9.	बेइज्जती से उसके तन पर कालिख पुत गई।	बेइज्जती से उसके मुँह पर कालिख पुत गई
10.	महेश को अपने जीवन में कई पापड़ सेकने पड़े।	महेश को अपने जीवन में बहुत पापड़ बेलने पड़े।

वर्तनी सम्बन्धी–

अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों का प्रयोग भी वाक्य में दोष ला देता है। अत: शब्दों की वर्तनी का भी विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	रामायण की रचना वाल्मिकी ने की थी।	रामायण की रचना वाल्मीकि ने की थी।
2.	मानस के रचियता तुलसीदास हैं।	मानस के रचयिता तुलसीदास हैं।
3.	सुभद्रा कुमारी चौहान एक अच्छी कवित्री थी।	सुभद्रा कुमारी चौहान एक अच्छी कवयित्री थी।
4.	अतिथि भगवान का रूप होता है।	अतिथि भगवान का रूप होता है।
5.	शिक्षा से भविष्य उज्वल होता है।	शिक्षा से भविष्य उज्ज्वल होता है।
6.	राम ने अहिल्या का उद्धार किया था।	राम ने अहल्या का उद्धार किया था।
7.	आज वह इंदोर गया है।	आज वह इंदौर गया है।
8.	श्रृंगार रसराज कहलाता है।	शृंगार रसराज कहलाता है।
9.	यहाँ सभी प्रकार की दवाईयँ मिलती हैं।	यहाँ सभी प्रकार की दवाइयाँ मिलती हैं।
10.	हमें प्रातकाल घूमना चाहिए।	हमें प्रात:काल घूमना चाहिए।

संयोजक संबंधी–

दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हुए सभी संयोजक का प्रयोग करना आवश्यक होता है। इसके अभाव में वाक्य में अशुद्धि हो जाती है।

क्र.सं.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	जैसा बोओगे, उसी प्रकार का पाओगे।	जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
2.	क्योंकि वह देरी से आया अत: प्रवेश न कर सका।	क्योंकि वह देरी से आया इसलिए प्रवेश न कर सका।
3.	आपको अब बस स्टेण्ड पहुँच जाना चाहिए क्योंकि आपको बस मिल जाए।	आपको अब बस स्टेण्ड पहुँच जाना चाहिए ताकि आपको बस मिल जाए।
4.	यद्यपि रमेश ने परिश्रम किया पर उसे सफलता नहीं मिली।	यद्यपि रमेश ने परिश्रम किया तथापि उसे सफलता नहीं मिली।
5.	जैसा अच्छा काम गोविन्द ने किया जैसा तुम भी करो।	जैसा अच्छा काम गोविन्द ने किया, वैसा तुम भी करो।

अन्य महत्वपूर्ण वाक्य–

	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	उसकी सौन्दर्यता अनुपम है।	उसका सौन्दर्य अनुपम है।
2.	कृपया कल पधारने की कृपा करें।	कृपया कल पधारें।
3.	एक कविता की पुस्तक लाना।	कविता की एक पुस्तक लाना।
4.	उसे धैर्यता से काम लेना चाहिए।	उसे धैर्य से काम लेना चाहिए।
5.	वहाँ अनेकों लोग एकत्र थे।	वहाँ अनेक लोग एकत्र थे।
6.	राम की दृष्टि बड़ी पतली है।	राम की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म है।
7.	मेरे को कविता याद करनी है।	मुझे कविता याद करनी है।
8.	अमित ने झूठ कही थी।	अमित ने झूठ कहा था।
9.	वह सकुशलतापूर्वक पहुँच गया।	वह कुशलतापूर्वक पहुँच गया।
10.	वह बाजार में पुस्तक लेने गया।	वह बाजार से पुस्तक लेने गया।
11.	इस मुद्‌दे के ऊपर बहस जरूरी है।	इस मुद्‌दे पर बहस जरूरी है।
12.	मानव ईश्वर की सबसे सुन्दरतम रचना है।	मानव ईश्वर की सुन्दरतम रचना है।
13.	दिल्ली में देखने योग्य अनेक दर्शनीय स्थान हैं।	दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थान हैं।
14.	मैंने शिमला जाना है।	मुझे शिमला जाना है।
15.	कृपया गंदगी मत कीजिए।	कृपया गंदगी न करें।
16.	वे पुराने कपड़े के व्यापारी हैं।	वे कपड़े के पुराने व्यापारी हैं।

17.	हमारे वाला मकान खाली है।	हमारा मकान खाली है।
18.	माँ दही जमा रही है।	माँ दूध जमा रही है।
19.	वह आटा पिसाने गया है।	वह गेहूँ पिसाने गया है।
20.	यह आपका ही हस्ताक्षर है।	यह आपके ही हस्ताक्षर हैं।
21.	मन को लघु मत करो।	मन को छोटा मत करो।
22.	मैं तेरे को मिठाई लाया हूँ।	मैं तेरे लिए मिठाई लाया हूँ।
23.	मेरे पास केवल मात्र दस रुपये हैं।	मेरे पास केवल दस रुपये हैं।
24.	जैसा गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा।	जितना गुड़ डालो, उतना मीठा होगा।
25.	फल कल खरीदे थे वे जो बहुत अच्छे थे।	जो फल कल खरीदे थे, वे बहुत अच्छे थे।
26.	उसमें अभी बच्चाई है।	उसमें अभी बचपना है।
27.	वहाँ की तम्बाकू अच्छी होती है।	वहाँ का तंबाकू अच्छा होता है।
28.	सब्जी में हरी धनिया डाली गई।	सब्जी में हरा धनिया डाला गया।
29.	इस बात की चर्चा पूरे मोहल्ले में है।	इस बात की चर्चा पूरे मोहल्ले में है।
30.	गार्गी एक विद्वान महिला थी।	गार्गी एक विदुषी महिला थी।
31.	जानता कौन है इस बात को।	इस बात को कौन जानता है?
32.	बच्चे को प्लेट में रखकर खाना खिलाओ।	बच्चे को खाना प्लेट में रखकर खिलाओ।
33.	पढ़ाई में आलस्यता ठीक नहीं।	पढ़ाई में आलस्य ठीक नहीं।
34.	चोर दंड देने योग्य है।	चोर दंड पाने योग्य है।
35.	इस खबर ने मुझे विस्मय कर दिया।	इस खबर ने मुझे विस्मित कर दिया।
36.	सविनयपूर्वक निवेदन है।	सविनय/विनयपूर्वक निवेदन है।
37.	उसे भारी प्यास लगी है।	उसे बहुत प्यास लगी है।
38.	15 अगस्त को देश गुलामी की दासता से आजाद हुआ।	15 अगस्त को देश आजाद हुआ।
39.	वहाँ बहुत नीची खाई थी।	वहाँ बहुत गहरी खाई थी।
40.	जो लोग बाहर जाना चाहते हैं, वह जा सकते हैं।	जो लोग बाहर जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं।
41.	इस यंत्र की उत्पत्ति किसने की?	इस यंत्र का आविष्कार किसने किया?
42.	वह बुद्धिमान बालिका है।	वह बुद्धिमती बालिका है।
43.	महात्मा ने उसे श्राप दिया।	महात्मा ने उसे शाप दिया।
44.	मैं रविवार के दिन मंदिर जाता हूँ।	मैं रविवार को मंदिर जाता हूँ।
45.	वह घस में बैठा है।	वह घास पर बैठा है।

46.	उसकी लपि हिन्दी है।	उसकी लिपि देवनागरी है।
47.	चार बजने को दस मिनट है।	चार बजने में दस मिनट हैं।
48.	इस कठन काम को करने का बीड़ा कौन चबाता है?	इस कठिन काम को करने का बीड़ा कौन उठाता है?
49.	व्यक्ति अपनी गरज से नाक घिसता है।	व्यक्ति अपनी गरज से नाक रगड़ता है।
50.	वायुयान चार घंटा बाद आएगा।	वायुयान चार घंटे बाद आएगा।
51.	पूज्यनीय पिताजी नहीं आए।	पूज्य/पूजनीय पिताजी नहीं आए।
52.	चाय बहुत दानादार है।	चाय बहुत दानेदार है।
53.	कृष्ण ने कंस की हत्या की।	कृष्ण ने कंस का वध किया।
54.	शीतल आम का रस पीजिए।	आम का शीतल रस पीजिए।
55.	कोलंबस ने अमेरिका का आविष्कार किया।	कोलंबस ने अमेरिका की खोज की।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्र. 1. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) निधि (ब) गोपिनी

(स) दारिद्रयता (द) सदृश्य [ ]

प्र. 2. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द है–

(अ) गीतांजलि (ब) प्रतिलिपि

(स) अहोरात्र (द) रचियता [ ]

प्र. 3. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) तरूछाया (ब) निधी

(स) स्वावलंबन (द) मध्यान्ह [ ]

प्र. 4. निम्नलिखित में से शुद्ध शब्द है–

(अ) प्रसासन (ब) अतिथी

(स) निमित (द) जगन्नाथ [ ]

प्र. 5. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द है–

(अ) गोपी (ब) पुर्नजन्म

(स) दरिद्रता (द) अनुग्रह [ ]

प्र. 6. आज गर्म लू चल रही है। वाक्य में अनावश्यक शब्द है–

(अ) आज (ब) गर्म

(स) लू (द) चल [ ]

प्र. 7. गुरुजी ने शिष्य को आर्शीवाद दिया। वाक्य में दोषपूर्ण शब्द है–

(अ) गरुजी (ब) शिष्य

(स) आर्शीवाद (द) दिया [ ]

प्र. 8. 'पानी पीकर नाम पूछना निरर्थक है' वाक्य किस प्रकार के दोष को दर्शाता है–

(अ) वर्तनी दोष (ब) अनावश्यक शब्द

(स) सर्वनाम दोष (द) मुहावरे का दोष [ ]

उत्तर–1. (अ) 2. (द) 3. (स) 4. (द) 5. (ब) 6. (ब) 7. (स) 8. (द)

प्र. 9. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

विगृह, इक्षा, पहाड, तत्कालिक, कालंदी, परीचय, त्रिमासिक, प्रामाणिकरण

प्र. 10. निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द छाँटिए–

तृण, धोबन, निरालंकृत, रवींद्र, विव्हल, भौगोलिक, मेघाछन, सोंदर्य, वैदेही

प्र. 11. निम्न में से कौनसा वाक्य अशुद्ध है–

(क) अब तुम जाइये (ख) यहाँ शृंगार-सामग्री मिलती है

(ग) तुम वास्तव में चतुर हो (घ) हिमालय पर्वतों का राजा है

प्र. 12. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए–

(i) हमें दूध को पीना चाहिए।

(ii) तुम कुर्सी में बैठ जाओ।

(iii) खरगोश को काटकर फल खिलाओ।

(iv) ईमानदारी मनुष्य का श्रेष्ठ लक्षण है।

(v) सेना ने गोलों व तोपों से आक्रमण किया।